P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान में पर्यटन विकास : एक अध्ययन

हरि शंकर गुप्ता
सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग,
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय,
अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान आरंभ से ही समृद्ध रहा है। हालांकि आज का विशाल राजस्थान 1947 से पूर्व अलग–अलग टुकड़ों में बंटा था और आजादी के पश्चात् 30 मार्च 1949 को सरदार पटेल के हाथों वर्तमान राजस्थान का उद्घाटन हुआ परन्तु इससे पूर्व भी यह जांगल प्रदेश, मत्स्य प्रदेश, शिवदेश, प्राग्वाड़, बांगड़, अर्कुट, अड़ावला, राजपूताना आदि के अलग–अलग नामों से सैलानियों में जाना जाता था। यहां के तीर्थस्थल विदेश के लोगों में श्रद्धास्थल रहे है। तीर्थाटन के रूप में देशाटन की परम्परा का निर्वाह करते लोग दूर–दराज से राजस्थान में प्राचीन काल से आते रहे हैं। कालान्तर में तीर्थाटन पर्यटन में परिवर्तित होता गया और तीर्थाटन का उद्देश्य भो यहां पर्यटन हो गया।

राजस्थान में पर्यटन, जो पहले तीर्थाटन व मनोरंजन के रूप में जुड़ा हुआ था, अब एक उद्योग के रूप में विकसित होने लगा है। हालांकि पर्यटन का उद्योग के रूप में विकास शनैः शनैः हुआ है, परन्तु आर्थिक क्रिया के रूप में इसका उपयोग निःसन्देह राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए खासा लाभदायी कहा जा सकता है। राजस्थान में लम्बे अर्से के बाद वर्ष 2015 में पर्यटन उद्योग के सर्वांगीण विकास, कला एवं संस्कृति विभाग के लिए राजस्थान सरकार द्वारा पर्यटन की नई नीति की घोषणा की गई है। नई पर्यटन नीति में पर्यटन उद्योग के बहुआयामी विकास के लिए नीति के उद्देश्य निर्धारित करते हुए राज्य सरकार की पर्यटन में भूमिका, आधारभूत ढ़ाँचा, विभिन्न सुविधाओं के विकास आदि के साथ ही पर्यटन प्रोत्साहन पर विशेष ध्यान देने पर जोर दिया गया है। हालांकि नई पर्यटन नीति में पर्यटन के लिए प्रदेश में बेहतर वातावरण को तैयार कर पर्यटन उद्योग का सभी स्तरों पर प्रभावी विकास करने की बात कही गई है परन्तु यह सब सम्भव तभी हो पाएगा, जब सैद्धान्तिक रूप में ही नहीं व्यावहारिक रूप में भी नीति लागू की जाती है।

मुख्य शब्द : राजस्थान, पर्यटन, तीर्थाटन, प्राकृतिक स्थल, धार्मिक स्थल, स्मारक, दुर्ग, महल।

प्रस्तावना

राजस्थान में आरम्भ से ही पर्यटन यहाँ की परम्परा का अंग रहा है, परन्तु वास्तविक रूप में इसे उद्योग मानकर विकसित करने की दिशा में प्रयास बहुत बाद में हुए। चूँकि पर्यटन से समृद्ध राजस्थान में आने वाले सैलानी वर्ष दर वर्ष यहाँ बढ़े है इसलिए राज्य सरकार द्वारा इस दिशा में विकास के कार्य भी निरन्तर क्रियान्वित कराए जाते रहे हैं। राज्य में पर्यटन को वर्ष 1989 में सर्वप्रथम उद्योग के रूप में मान्यता प्रदान की गई और इसके बाद इससे सम्बन्धित सहायक उद्योगों का भी यहाँ अच्छा–खासा विकास हुआ; परन्तु राज्य की अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस दिशा में प्रयास आरम्भ से ही सरकार द्वारा किए जाते रहे हैं। राजस्थान में पर्यटन उद्योग के महत्व को ध्यान में रखते हुए ही राज्य सरकार द्वारा स्वदेशो एवं विदेशो पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए समय–समय पर यथोचित प्रयास किए जाते रहे हैं। ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सैलानी व पारम्परिक केन्द्रों की सुरक्षा करने तथा उन्हें आधुनिकतम सुविधाओं से सुसज्जित करने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा सर्वप्रथम सन् 1955 में पर्यटन निदेशालय की पृथक् से स्थापना की गई। इसके बाद पर्यटन स्थलों का विकास करने तथा पर्यटकों को संगीत एवं लोक कलाओं से परिचित कराने के लिए मेलों व प्रदर्शनियों का आयोजन करने के लिए 'पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग' की भी स्थापना की गयी। पर्यटन उद्योग के विकास के अन्तर्गत राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की भूमिका को विशेष रूप से स्वीकारा गया है। भारत को नए पर्यटन से प्रतिवर्ष कई अरब रुपयों की विदेशो मुद्रा प्राप्त होती है। इसमें राजस्थान का योगदान भी कम नहीं है। आज भारत–भ्रमण के लिए आने वाले तीन विदेशो पर्यटकों में से एक राजस्थान अवश्य

आता है। इससे यह तो स्पष्ट है कि विदेशो मुद्रा अर्जित करने में पर्यटन उद्योग की महती भूमिका है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. राजस्थान में पर्यटन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. राजस्थान में पर्यटकों को आने वाली विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालना तथा उनके समाधान के सुझाव देना।
3. राजस्थान में पर्यटन विकास की संभावनाओं का पता लगाना।
4. पर्यटन विकास के द्वारा रोजगार की संभावनाओं का पता लगाना।
5. पर्यटन विकास हेतु सरकारी प्रयासों का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान में पर्यटन विकास से सम्बन्धित द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है जिसके अर्न्तगत राजस्थान में पर्यटन विकास विषय से सम्बन्धित प्रकाशित सामग्री, महत्वपूर्ण विद्वानों की पुस्तकें, समय–समय पर सरकार द्वारा निर्मित पर्यटन नीतियां, शोधपत्रों में प्रकाशित आलेख, समाचार पत्र–पत्रिकाओं में शोध विषय से सम्बन्धित सम्पादकीय एवं आलेखों का अध्ययन किया गया है।

साहित्यावलोकन

राजस्थान में पर्यटन विकास के सन्दर्भ में किये गये इस शोध के महत्व, उद्देश्यों तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गये साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है यथा–

राजे□ा कुमार व्यास की पुस्तक 'राजस्थान में पर्यटन प्रबंध' 2004 में लिखा गया है कि पर्यटन भारतीय परम्परा का आरम्भ से ही एक हिस्सा रहा है। बगैर चिमनी और धुएँ के इस उद्योग में उत्पादन कुछ भी नहीं होता फिर भी आय होती है और बहुत से लोगों को रोजगार भी मिलता है। पर्यटन के महत्व को देखते हुए ही भारत सरकार व राज्य सरकार ने इसे एक उद्योग का दर्जा प्रदान किया है। राजस्थान जैसे असोमित पर्यटन संभावनाओं वाले प्रदेशां में तो पर्यटन वैसे भी अपनी महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभा सकता है। पर्यटन के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पहलुओं पर गहराई से प्रकाश डालती इस पुस्तक में राजस्थान में पर्यटन प्रबंध की प्रभावशीलता का भी विश्लेषण प्रभावी ढंग से किया गया है।

अनुपम पाण्डेय द्वारा लिखित पुस्तक 'पर्यटन प्रबन्ध' 2007 वित्तीय आवश्यकताओं, स्रोतों एवं उन पद्धतियों का वर्णन करती है जो पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने के लिए जरुरी होते है तथा जिनके द्वारा आर्थिक कोष के विभिन्न स्रोतों की पूर्ति होती है। साथ ही इस पुस्तक में विनियोजन एवं लाभों की वजह से पर्यटन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं तथा समाधानों को भी रेखांकित किया गया है।

अनुपम पाण्डेय की 2007 में प्रकाशित रचना 'पर्यटन का स्वरूप' में पर्यटन के स्वरूप को निश्चित करने वाले सभी पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है तथा इसमें पर्यटन की परिभाषा, पर्यटन के मूल तत्व, पर्यटन संगठन, पर्यटक आवासीय व्यवस्था, पर्यटन के सामाजिक पक्ष, आर्थिक पक्ष, सांस्कृतिक पक्ष, पर्यटन विकास एवं संचार माध्यम, पर्यटन उत्पादन तथा उनका बाजारीकरण आदि जो पर्यटन का स्वरूप निर्धारित करते है, का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

गोपीनाथ शर्मा की पुस्तक 'राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास' 2007 में बताया गया है कि संस्कृति की दृष्टि से राजस्थान भारत के उन समृद्ध प्रदेशों में से है, जो विश्व समाज को कुछ दे सकते है। जो देय सामग्री है वह सभ्यता की अविच्छिन्नता तथा ओजस्विता है। चाहे यहां का साहित्य हो या कला, वे ऐसे अनमोल रत्न है कि इनका मूल्यांकन सहज ही होना संभव नहीं है। इनका स्वरूप चिंतन और मनन से निर्धारित होता है। यही वे तत्व है जिन्होंने यहाँ के मानव में उदारता, दृढ़ता और शौर्य का संचार किया।

राजे□ा कुमार व्यास द्वारा लिखित रचना 'पर्यटनः उद्भव एवं विकास' 2008 में पर्यटन के लगभग सभी पहलूओं व इस उद्योग की विभिन्न क्रियाओं का सांगोपांग विश्लेषण करते हुए लिखा गया है कि विदेशो मुद्रा एवं रोजगार प्रदान करने में सक्षम पर्यटन आज विश्व का तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है। प्रस्तुत पुस्तक में पर्यटन उद्योग की समस्याएँ एवं भविष्य की चुनौतियां, पर्यटन संगठन एवं पर्यटन के नये स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है।

ए.के.रैना द्वारा लिखित पुस्तक 'पर्यटन प्रबंधः सिद्धान्त और व्यवहार' 2009 में पर्यटन से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण बिन्दूओं को छते हुए एक समग्र आकलन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पर्यटन उद्योग में सेवा एवं संचालन व्यवस्था, विपणन और संचार, नीति और नियोजन तथा पर्यटन के सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय व राजनीतिक प्रभाव सभी आयाम पर्यटन उद्योग को प्रभावित करते है। इन्हीं बिन्दुओं का महत्व पर्यटन उद्योग की दृष्टि से समझाने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

राजे□ा शुक्ला एवं **र□िम शुक्ला** द्वारा रचित पुस्तक 'पर्यटन भूगोल' 2011 में पर्यटन को वर्तमान में एक उभरता हुआ उद्योग बताते हुए कहा गया है कि किसी देश की अर्थव्यवस्था को पर्यटन काफी गहराई तक प्रभावित करता है। जिस प्रकार विश्व के किसी एक भाग में अप्राप्य वस्तु की मांग होने पर उसे दूसरे देश से आयात कर मंगवा लिया जाता है जिससे मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है ठीक उसी तरह जलवायु, स्थलाकृतियां जल–वितरण, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विषमता के कारण मानव अपने कुछ समय हेतु आनन्दमय छुट्टिया बिताने के लिए एक स्थान से अन्यत्र भ्रमण करता है। इससे पर्यटक उस क्षेत्र के विकास में काफी योगदान देता है। वर्तमान समय में विकसित देश आर्थिक व्यवस्था से काफी मजबूत होने के कारण तथा विकासशील देश जैसे भारत, जहाँ कि सांस्कृतिक, स्थलाकृतियां, एक ही समय में पृथक–पृथक जलवायु का होना विश्व में काफी लोकप्रिय है। उन देशों के सैलानी भारत आकर सैर का आंनद लेते है।

लक्ष्मीनारायण नाथूरामका अपनी रचना 'राजस्थान की अर्थव्यवस्था' 2014 में लिखते है कि राज्य में उद्योगों के साथ–साथ पर्यटन के विकास की काफी संभावनाएँ है। यहाँ के प्रमुख शहर जैसे जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, अजमेर, बीकानेर, अलवर आदि अपनी अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं व कलाओं के लिए जाने जाते है। इसी प्रकार राज्य में अन्य छोटे–छोटे कस्बों की हवेलियों की चित्रकारियां भी मनमोहक है और राज्य के विभिन्न त्योंहार, उत्सव, मेले, गीत–संगीत, नृत्य, कला–कृतियां आदि सभी बरबस देशो व विदेशो पर्यटकों को सदियों से अपनी तरफ आकर्षित करते रहे है और भविष्य मे भी करते रहेंगे।

राजे□ा कुमार व्यास की पुस्तक ''भारत में पर्यटन'' 2017 में बताया गया है कि भारत में जितनी विविधता है, उतनी विश्व के किसी भी अन्य देश में नहीं है। हिमाच्छादित पहाडियाँ, हिमखंड, गरम जल के फव्वारे, गुफाएँ, सम्मोहित करने वाली झीलें, दूर तक पसरा रेगिस्तान, समुद्र तट, खान–पान, रहन–सहन, त्योंहारों के आकर्षण आदि के बारे में जितना कहा जाए उतना ही कम है। यही वह देश है जहाँ सभी रुचियों के पर्यटकों के लिए वैविध्यपूर्ण छटा के पर्यटन स्थल है। यही नहीं, पर्यटन के लिहाज से भारत को एकमात्र ऐसा देश भी कहा जा सकता है जिसमें पर्यटक दूसरे देशों के मुकाबले सिर्फ एक तिहाई या इससे भी कम खर्च पर घूमने–फिरने का आनंद उठा सकते है।

मोहन लाल गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक 'राजस्थान के प्राचीन दुर्ग (सिंधु सभ्यता से गुप्त काल तक)' 2017 में कालीबंगा की प्राचीन सभ्यता की खुदाई में प्राप्त दुर्ग अवशेषों से लेकर गुप्त काल तक के कालखण्ड में बने दुर्गो का वर्णन किया गया है। यद्यपि उस कालखण्ड के अधिकांश दुर्ग अब नष्ट हो गये है तथा उनका कोई चिह्न तक प्राप्त नहीं होता। किन्तु उनमें से कुछ दुर्ग निरंतर जीर्णोद्धार होते गये और आज भी अपने परिवर्तित एवं सवंर्द्धित रूप में देखने को मिले है।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा शोध विषय से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। समय तथा अन्य परिस्थितियों की सीमाओं में रहते हुए जो साहित्य सुलभ हो पाये, उन्हीं की यहां समीक्षा की गइ है।

राजस्थान में पर्यटन विकास

अपने समृद्धशाली व वैविध्यपूर्ण पर्यटन स्थलों के कारण राजस्थान आरम्भ से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ कहीं दूर तक फैला रेत का समन्दर पर्यटकों को मौन आमंत्रण देता है तो कहीं शीतलता का एहसास कराती यहाँ की झीलें व नदियाँ स्वतः ही पर्यटकों को अपनी ओर खींचती है। दरअसल जितनी समृद्ध यहाँ की लोक परम्पराएँ व विरासत की वस्तुएँ हैं, उतना ही वैभवपूर्ण है यहाँ के किलों व महलों का सौन्दर्य। 'पधारो म्हारै देस' के आमंत्रण के साथ पर्यटन का राजस्थान में गत वर्षो के दारान खासा विकास हुआ है। समृद्ध भूमि राजस्थान के प्रति तथा यहाँ के लोगों के बारे में जानने के प्रति आरम्भ से ही बाहर के लोगों में जिज्ञासा रही है। इसी जिज्ञासा की भावना ने यहाँ के पर्यटन विकास को गति दी है। राज्य में पर्यटन का उद्योग के रूप में विकास यद्यपि बहत बाद में हुआ, परन्तु यहाँ पर्यटन की परम्परा आरम्भ से ही रही है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने तो अपने राजस्थान भ्रमण के दौरान जो कुछ यहाँ देखा उसके आधार पर उन्होंने राजस्थान को अत्यधिक रसमय तथा मुग्ध करने वाला प्रदेश माना। राजस्थान के बारे में यहाँ के समृद्ध पर्यटन स्थलों के बारे में उन्होंने अपनी पुस्तक 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया' में विस्तार से लिखा है।

आन, बान और शान की भूमि राजस्थान आरंभ से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। उस समय, जब पर्यटन शब्द का अस्तित्व सामने नहीं आया था, तब से ही राजस्थान के प्रति लोगों में आकर्षण रहा है। संभवतः राजस्थान ही एकमात्र ऐसा प्रदेश है जहां स्वतंत्रता से पूर्व ही पर्यटन का व्यवस्थित रूप उभर कर सामने आया। राजा महाराजाओं ने अपने किलों, गढ़ों और महलों को विदेशो पर्यटकों के लिए खोलने की शुरुआत आजादी से पूर्व ही कर दी। उनकी इस सोच के पीछे कारण था अपनी रियासत में आर्थिक संसाधनों का प्रयोग करना। इस लिहाज से पर्यटन की शुरुआत स्वतंत्रता से पूर्व ही राजस्थान में हो गयी।

वैसे भी अपने समृद्ध पर्यटन स्थलों के कारण राजस्थान का पूर भारत में विशिष्ट स्थान रहा है। इस बात को उन सभी ने माना भी है जो एक बार राजस्थान आये या फिर राजस्थान के बारे में सुना। यह राजस्थान की भूमि का आकर्षण ही रहा है कि सुप्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल टॉड ने राजस्थान के अतीत व इसके गौरवशाली वैभव के बारे में घुमक्कड़ी करके लिखा हैं। यही नहीं, कर्नल टॉड राजस्थान आए थे यहां के इतिहास की खोज करने परन्तु फिर यहां के आकर्षण में इस प्रकार बंधे कि यहीं के होकर रह गए। उन्होंने राजस्थान के इतिहास, यहां की कला–संस्कृति, सुन्दर व मनोरम पर्यटन स्थलों के बारे में घूम–घूम कर अनुसंधान करके लिखा हैं।

त्याग, तपस्या और बलिदान की गाथाओं को अपने में समेटे शौर्य और साहस की धरती राजस्थान आरंभ से ही पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रही है। कहीं दूर तक पसरा रेत का समन्दर तो कहीं शीतलता का एहसास कराती झीलें। करधनी की तरह ऊंची–नीची अरावली की पर्वत श्रृंखलाएं तो कहीं पठार और मैदान। कितनी अनूठी है भूमि राजस्थान की जहां कहीं मीलों तक पसरा रेत का समन्दर और उसके ऊपर पंक्तिबद्ध उड़ान भरती कुरजां तो कहीं जयसमन्द, नक्की जैसी झिलमिलाती गहरी नीली झीलें और उनमें अठखेलियां करती मछलियां।

राजस्थान का नाम लेते ही आंखों के सामने मानो साकार हो उठती है वीरों की कहानियां। राजस्थान, जिसका नाम लेते ही खड़कते खांडे बिजलियों की तरह कौंध उठते हैं और घाटियों, पठारों को गुंजाती हुई घोड़ों की टापें, मेघ–गर्जन–सा करने लगती है। जहां धधकती अग्नि ज्वालाओं में सर्वस्व का होम करने वाली अखण्ड सौभग्यवती पद्मिनियां और केसरिया–कसूमल परिधानों वाले, गले में तुलसी माला तथा शीष पर शालिग्राम धारण किए मातृभूमि की रक्षा में प्राणोत्सर्ग करते हुए जूझारू साक्षात् प्रतीत होते हैं। यही वह भूमि है जिसके कण–कण

में त्याग और बलिदान की ऐसी गाथाएं मिलती है जो अन्यत्र कहीं नहीं हैं। पन्नाधाय के त्याग, प्रताप के शौर्य, कुंभा के पराक्रम की भूमि राजस्थान का प्राकृतिक परिवेष जितना वैविध्यपूर्ण है उतना ही सरस–सजीला है इसका सांस्कृतिक वैभव। शूरवीरों और पराक्रमी याद्धाओं की अनूठी गाथाओं को अपने आंचल में समेटे राजस्थान की धरती के कण–कण में पन्ना धाय के त्याग, कुंभा और राणा जैसे सूरमाओं का पराक्रम, राणाप्रताप का स्वाभिमान, हमीर का हठ, जयमल पत्ता की कुर्बानी, भक्तिमती मीरा की अनूठी प्रभु आराधना, पद्दिनी का सौन्दर्य, महेन्द्र–मूमल की प्रणय गाथा, ढोला–मरवण के अजर–अमर प्यार की कहानियां छुपी हुई है।

एक ओर जहां 800 वर्ष से भी अधिक पुराना जैसलमेर का स्वर्ण दुर्ग है तो दूसरी ओर महाराणाओं की शौर्य गाथाओं का प्रतीक चित्तौड़गढ का शानदार किला राजस्थान की अनूठी धरोहर। ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न ऐतिहासिक इमारतें, स्थापत्यकला में बेजोड़ जैसलमेर की हवेलियां, प्राचीन मन्दिर आज भी मोह लेते हैं। रंगीली है धरती राजस्थान की, जहां कहीं घना पक्षी अभयारण्य में देश–विदेश के पक्षियों की मनोहारी छवि दिखाई देती है तो कहीं रणथम्भौर और सरिस्का जैसे बाघों के अभयारण्य है। कहीं गोड़ावण की दौड़ तो कहीं थिरकते मोर। कहीं मेनाल सरीखे झरनों का आकर्षण है तो कहीं हिमालय के पानी को धोरां तक लाने में भागीरथी प्रयासों की गाथा कहती दिखाई देती है– इन्दिरा गांधी नहर। हनुमानगढ़ जिले में स्थित कालीबंगा में मोहन–जो–दड़ो सभ्यता के समकालीन प्राचीन अवषेष तो दूसरी ओर 13 लाख वर्ष पुराने वुड फोसिल्स जैसलमेर के पास देखे जा सकते है। भारत का एकमात्र ब्रह्माजी का मन्दिर भी राजस्थान के पुष्कर में है। यहां के कोने–कोने में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से सम्पन्न इमारतों का पूरा एक खजाना है।

समूह–संस्कृति के परिचायक है यहां के तीज–त्योहार, मेले और उत्सव। कहीं घूमर की मोहक अदाएं हैं तो कहीं फागुन की मस्ती में चंग की थाप पर गीदड़ नृत्य का अपना आकर्षण है। कहीं हवाई नृत्य के रोमांचक करतब है तो कहीं विद्युत गति–सा तेराताली नृत्य मन को मोह लेता है। अलगोजे की मधुर ताल के साथ मोरचंग, भपंग और कमायचा जैसे लोकवाद्यों की झंकार मन के तारों को झंकृत–सी कर देती है। पग–पग पर संस्कृति की अनूठी परम्पराओं की भूमि राजस्थान की हस्तकला, यहां की वेशभूषा– सभी कुछ ऐसी विशेषताएं लिए हैं कि यहां आने वाला बस यहीं का होकर रह जाता है। राजस्थान के बारे में सुप्रसिद्ध कवि कन्हैयालाल सेठिया ने ठीक ही कहा है– ''आ तो सुरगा नै सरमावै, इण पर देव रमणनै आवै, धरती धोरां री।''

पद्मिनी जौहर की भूमि कैसी है? राजस्थान के त्याग की भूमि कैसी है? मीरा की भूमि, हल्दीघाटी के इतिहास की भूमि, ख्वाजा साहब के उर्स की भूमि, घूमर, तेरताली जैसे नृत्यों की सांस्कृतिक भूमि आदि के बारे में जिज्ञासाओं ने सैलानियों को आकर्षित किया और राजस्थान के अलग–अलग रियासतों में बंटा होने के बावजूद स्वतंत्रता पूर्व से ही देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों की संख्या इस बात की गवाह है।

आज भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है जहाँ इसकी राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 6. 23 प्रतिशत और भारत के कुल रोजगार में 8.78 प्रतिशत का योगदान है। भारत सर्वाधिक 10 वर्षीय विकास क्षमता के साथ 2009–2018 तक पर्यटन का आकर्षण केन्द्र बन गया है। वर्ष 2015 के मुकाबले 9.4 प्रतिशत वृद्धि के साथ वर्ष 2016 में 77.83 लाख विदेशो पर्यटकों का आगमन हुआ। वहीं 15.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2017 में यह संख्या 90.01 लाख हो गई। साथ ही पिछले वर्ष की तुलना में 16.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1,60,865 करोड़ रूपये की विदेशो मुद्रा अर्जित की गई। वर्ष 2016 में पिछले वर्ष की तुलना में 12.7 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 1613 मिलियन घरेलू पर्यटक आये। भारत में पर्यटकों की बढती संख्या तथा इससे बढती आय की वजह से ही यात्रा व पर्यटन प्रतिस्पर्धा सूचकांक 2017 में भारत की स्थिति 25 अंक सुधरकर 40वें स्थान पर आ गई है, जो कि भारत में पर्यटन उद्योग के विकसित होने का पमाण सिद्ध करती है।

भारत की भांति राजस्थान में भी पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढती जा रही है। वर्ष 2017 में राजस्थान में 6.36 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 16.10 लाख विदेशो पर्यटक तथा 10.66 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 459.17 लाख देशो पर्यटक सहित कुल 475.27 लाख पर्यटक राजस्थान भ्रमण हेतु आये राजस्थान में आने वाले देशो पर्यटकों की संख्या 2010 से लगातार बढ़ रही है तथा विदेशो पर्यटकों की संख्या वर्ष 2013 व 2015 को छोड़कर लगातार बढ़ रही है।

राजस्थान में पर्यटन विकास के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। पर्यटन विभाग की विभिन्न योजनाओं हेतु बजट लगातार बढ़ाया जा रहा है। वर्ष 2014–15 में 61.12 करोड़ बजट का प्रावधान था जो वर्ष 2017–18 में बढ़ाकर 163.51 करोड़ कर दिया गया है।

प्रमुख सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण से यह निश्चित ही सिद्ध होता है कि राजस्थान में पर्यटन उद्योग विकास के मार्ग पर अग्रसर तो हो चला है परंतु इसे एक रोजगारपरक तथा आर्थिक विकास का साधन बनाने का स्वप्न पूर्ण होना अभी शेष है अतः इस दिशा में वर्तमान शोध निष्कर्षो तथा शोधकर्त्ता के स्वय के अनुभवों के आधार पर राजस्थान में पर्यटन उद्योग की दशा ओर सुधारने तथा सुदृढ़ करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

1. धार्मिक स्थलों पर बढ़ती हुई पर्यटकों की संख्या को ध्यान में रखकर विकास की नई योजनाऐ बनाई जाए।
2. पर्यटकों के ठहरने योग्य आरामदायक किन्तु सस्ते होटल और धर्मशालाएं बनाए जाएं।
3. पर्यटन स्थलों पर जल की तथा शौचालयों की उत्तम सुविधाएं की जानी चाहिए।
4. निरंतर तेजी से बढ़ती पर्यटकों की संख्या के कारण, चोरी डकैती, लूटपाट, धोखाधड़ी की समस्याएं बढ़

रही है। जिनको रोकने के लिए सुरक्षा के उचित प्रबंध किये जाए। पर्यटन स्थलों पर पुलिस बल बढ़ाया जाये। अन्यथा इन घटनाओं का विदेशो पर्यटकों पर बुरा प्रभाव पड़ता है और वे राजस्थान के पर्यटन स्थलों पर आना बंद कर देंगे, जिससे राज्य की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

5. पर्यटक संख्या बढ़ने के कारण परिवहन पर दबाव बढ़ जाता है, परिवहन के साधन नहीं हो पाते है तथा परिवहन के साधनों की कमी से विभिन्न प्रकार के वाहनों के रेट बढ़ जाते है, जिससे पर्यटक बुरी तरह से प्रभावित होता है। अतः राज्य सरकार के परिवहन विभाग को इस और विशेष ध्यान देना चाहिए।
6. स्थानीय लोगों द्वारा पर्यटकों के शोषण को रोकने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
7. पर्यटकों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण एवं सौन्दर्य का जो ह्रास हो रहा है उसे रोका जाना चाहिए।
8. पर्यटन स्थलों पर विद्युत की रोशनी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
9. पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के लिए सरकार द्वारा प्रशिक्षित तथा कई भाषाओं के जानकार गाइड होने चाहिए।
10. पर्यटन स्थलों पर भीखारियों, आवारा पशुओं तथा कई स्थलों पर बंदरों का बड़ा आतंक होता है, इसे पर्यटन विभाग द्वारा दूर किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी सुझाव तुरंत क्रियान्वित हो जाए, यह अपेक्षा नहीं है। वास्तव में आवश्यकता अभी और प्रतिबद्धता की है। शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि राजस्थान में पर्यटन विकास के चिह्न हर क्षेत्र में देखे जा सकते है राजस्थान में देशो एवं विदेशो पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। राज्य सरकार ने इस दिशा में वर्ष 2015 में राजस्थान की पर्यटन नीति 2017 जारी की है जिसमें पर्यटन को रोजगार तथा आय से जोड़ने पर ज्यादा जोर दिया गया है। राजस्थान में पर्यटन उद्योग पर और अधिक सतत् और स्थायी ध्यान देने की आवश्यकता है। राजस्थान में पर्यटन उद्योग को अभी लंबा रास्ता तय करना है राज्य सरकार ने भी अब इसमें रूचि दिखाना शुरू किया है जिससे आशा बलवती हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पाण्डेय, अनुपमा, पर्यटन का स्वरूप, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007

पाण्डेय, अनुपमा, पर्यटन प्रबंध, डिस्कवरी पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 2007

रैना, ए. के., पर्यटन प्रबंध सिद्धांत और व्यवहार, अभिनव प्रकाशन, अजमेर, 2009

व्यास, राजेश कुमार,, पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2008

व्यास, राजेश कुमार,, राजस्थान में पर्यटन प्रबंध, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2004

नाथूरामका, लक्ष्मीनारायणः राजस्थान की अर्थव्यवस्था, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर, 2007

शुक्ला, राजेश, रश्मि, पर्यटन भूगोल, अर्जुन पब्लिषिंग हाउस, नई दिल्ली, 2011

शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007

गुप्ता, मोहन लाल, राजस्थान के प्राचीन दुर्ग, (सिंधु सभ्यता से गुप्त काल तक) शुभदा प्रकाशन, जोधपुर, 2017

शर्मा, यादवेन्द्र, राजस्थान से जान पहचान, विद्यार्थी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1991